SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय एवं दक्षिण पूर्व एशिया के स्थापत्य कला एवं संस्कृति का एक ऐतिहासिक अध्ययन

संगीता कुमारी सिंह, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
संगीता कुमारी सिंह, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/04/2020
Revised on : -----
Accepted on : 11/04/2020
Plagiarism : 01% on 01/04/2020

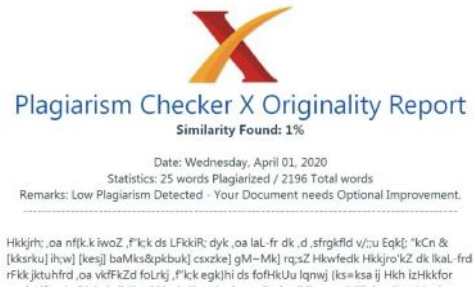
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Wednesday, April 01, 2020
Statistics: 25 words Plagiarized / 2196 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Hkkjrh; ,oa nf[k.k iwoZ ,f"k;k ds LFkkiR; dyk ,oa laL-fr dk ,d ,sfrgkfld v/;;u Eqk[; "kCn &
[kksrku] ih;w] [kesj] baMks&pkbuk] csxzke] gM+Mk] rq;sZ Hkwfedk Hkkjro'kZ dk lkaL-frd
rFkk jktuhfrd ,oa vkfFkZd foLrkj ,f"k;k egk|hi ds fofHkUu lqnwj (ks=ksa ij Hkh izHkkfor

प्रस्तावना :–

भारतवर्ष का सांस्कृतिक तथा राजनीतिक एवं आर्थिक विस्तार एशिया महाद्वीप के विभिन्न सुदूर क्षेत्रों पर भी प्रभावित हुआ। आर्थिक एवं व्यापारिक संबधों के कारण भारत और चीन का संबंध गहरा होता गया और धार्मिक प्रभाव। बौद्ध धर्म का विकास का असर स्थापत्य पर भी पड़ा। पश्चिम एशिया के साथ भारत के संबंध होने की जानकारी हमें ईसा पूर्व 1400 तक में प्रसिद्ध बोगाजकोई के अभिलेख से प्राप्त होती है, जिसमें वैदिक देवताओं के नामों का उल्लेख मिला है। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, श्रीलंका में अपने दूत तथा पुत्र एवं पुत्रियों को भेजा। भारतीय व्यापारी वर्ग और विद्वानों ने भी भारतीय संस्कृत के प्रचार में अहम भूमिका निभाये हैं। खेतान प्रदेश में जो कि वर्तमान में तुर्की में स्थित है वहाँ के स्थलों की खुदाई में पंजाब तथा कश्मीर से संबधित वस्तुओं की प्राप्ति हुई है। दक्षिण पूर्व एशिया में मूर्तिकला का विशिष्ट नमूना खमेर कला में निर्मित प्रसिद्ध अंकोरवाट मंदिर है। दक्षिण–पूर्व एशिया के लोगो ने भारतवर्ष के सनातन (हिन्दु) धर्म और बौद्ध धर्म को अपनी स्वदेशी परंपराओं के अनुसार उसमें बदलाव किया और उसे अपनाया। भारतीय कला हमारी संस्कृत के सभी पक्षों को उजागर करने का सशक्त माध्यम है, और अपनी विशेषतओं के कारण ही एशिया के अधिकांश भागों में कला की परंपराओं को नवीन रूप प्रदान कर सकी है।

मुख्य शब्द :–

खोतान, पीयू, खमेर, इंडो–चाइना, बेग्राम, हड्डा, तुर्ये।

भूमिका :–

भारतवर्ष का सांस्कृतिक तथा राजनीतिक एवं आर्थिक विस्तार एशिया महाद्वीप के विभिन्न सुदूर क्षेत्रों पर भी प्रभावित हुआ। पश्चिमी एशिया के साथ भारत के सम्बन्ध होने की जानकारी हमें ईसा पूर्व 1400 तक में प्रसिद्ध बोगाजकोई के अभिलेख से मिलती है, जिसमें वैदिक देवताओं के नामों का उल्लेख है। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, श्रीलंका मे अपने दूत तथा पुत्र एवं पुत्रियों को भेजा। भारतीय व्यापारी वर्ग और विद्वानों ने भी विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रचार में अहम भूमिका निभाये हैं। खोतान प्रदेश में जो कि वर्तमान में तुर्की में स्थित है वहाँ के स्थलों की खुदाई में पंजाब तथा कश्मीर से सम्बन्धित वस्तुओं की प्राप्ति हुई। प्राचीन खोतान राज्य की स्थापना अंधे मौर्य राजकुमार कुणाल द्वारा किया जाना अनुमानित किया गया है। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए कश्मीर से एक विद्वान वैरोचन आया था और वहाँ बहुत सारे बौद्ध विहार बनवाये गये। यहाँ के गौतमी विहार का कुलपति आचार्य बुद्धसेन था ।

उद्देश्य :–

प्रस्तुत आलेख में भारतीय एवं दक्षिण–पूर्व एशिया के स्थापत्य जिनमें मंदिर एवं कला संस्कृति में एकरूपता या समानता पाया जाता है। इन सभी का ऐतिहासिक अध्ययन द्वारा इसकी विशेषताओं तथा कला शैली को उजागर करना है।

विषय–वस्तु :–

मध्य एशिया के साथ भारत का सम्बन्ध रेशम मार्ग के नाम से सुप्रसिद्ध है जो विभिन्न संस्कृतियों का मिलन–स्थली था। मध्य एशिया का उतरी मार्ग तथा दक्षिणी मार्ग खोतान, मीरान, कूचा, तूफान थे जो अंत में चीन के पश्चिम सीमांत पर तुन–हुआंग में जाकर मिल जाते थे, जो एक बौद्ध केन्द्र था और अपनी गुफाओं के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ बौद्ध धर्म के साथ–साथ ब्राह्मण धर्म भी लोकप्रिय था। ब्राह्मण पंथी देवताओं की मूर्तियाँ काफी संख्या में मध्य एशिया में प्राप्त हुई है। सबसे पुराना अवशेष ताजिकिस्तान से प्राप्त उत्कीर्ण लेख, जिसका सम्बन्ध पश्चिमी तुर्किस्तान में नारायण की उपासना करने वाले संप्रदाय से है। उत्कीर्ण लेख में खोतानी शक लिपि का प्रयोग किया गया जिसमें बुद्ध को नारायण नाम दिया गया है। मध्य एशिया में बौद्ध धर्म का प्रचार कुषाण काल से भी पहले का अनुमानित किया गया है, प्रसिद्ध बौद्ध धर्मशास्त्री घोषक, कनिष्क के काल में हुई बौद्ध परिषद के प्रमुख नेताओं में से एक था। तारामिता अर्थात् तरमेज का धर्ममित्र बौद्ध धर्म के वैभाषिक सम्प्रदाय से संबंधित महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता है ।

बौद्ध धर्म तथा बौद्ध देवताओं के अलावे कुछ हिन्दु संप्रदाय के देवता तथा देवियों मध्य एशिया के लोगों द्वारा मुख्य रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं। मध्य एशिया में शैव धर्म का प्रभाव भी स्पष्ट होता है। तिब्बत में बौद्ध धर्म का स्वतंत्र रूप से विकास 14वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में शुरू हुआ। कोरिया में बौद्ध धर्म डेढ़ शताब्दी मे ही सफल हुआ किंतु जापान की रूढ़िवादी विचारों के कारण इसे सफल होने में काफी समय लगा। राजा शोतोकू के समय (593–622 ई०) में बौद्ध धर्म जापान का राजधर्म बना। कान्जिन जो चीन से सम्बन्धित था तथा बोधिसेन जो ब्राह्मण भारद्वाज वंश का भारतीय था वह अपने अनुयायियों के साथ 936 ई० में जापान गया उन्होनें संगीत के वाद्य यंत्रों तथा भारतीय वीणाओं का प्रचलन किया ।

अफगानिस्तान में भी इस्लाम धर्म के आगमन से पूर्व हिन्दु धर्म और बौद्ध धर्म खूब फले–फूले थे। अफगानिस्तान के बौद्ध धर्म के केन्द्रो में बेग्राम (प्राचीन कपिशी), हड्डा (प्राचीन नगरहार) कुंदोज (वुखारिस्तान की प्राचीन राजधानी), वामियान आदि प्रमुख है। इस स्थान से बुद्ध की दो विशालकाय मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। गुफा मंदिर तथा विहारों की यहाँ अनगिनत संख्या उपलब्ध है। ब्राह्मण पंथी धर्म भी यहाँ काफी लोकप्रिय था, शिव, विष्णु, सूर्य, इन्द्र, ब्रह्म, स्कंद, कार्तिकेय, गंगा, दुर्गा की मूर्तियाँ ब्राह्मण अर्थात् हिन्दु धर्म से सम्बन्धित है। मूर्तियाँ काफी संख्या में उपलब्ध हुई है।

भारत और दक्षिण पूर्व एशिया :–

दक्षिण–पूर्व एशिया के भागों पर लगभग एक हजार वर्ष के हिन्दु शासन ने स्थानीय जनता के जीवन के प्रत्येक पक्षों को प्रभावित किया। यहाँ की शासन प्रणाली भारत की शासन प्रणाली से अलग नहीं थी। कला तथा स्थापत्य, मंदिर, विहार तथा स्तूपों का काफी संख्या में प्राप्त होना स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारत और दक्षिण पूर्वी एशिया के भागों में ब्राह्मणों, क्षत्रिय तथा वैश्य व्यापारियों ने राजनीतिक तथा सांस्कृतिक जीवन का योगदान दिया। कौडिन्य ब्राह्मण इंडोचाइना में फु–नान गया तो उसने वहाँ पर सांस्कृतिक जीवन को रसमय बनाकर उसका विकास किया। कंबोडिया में प्राप्त हुए अभिलेखों से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दुओं के आगमन से (चाहे वो व्यापारी, ब्राह्मण या भिक्षु किसी भी रूप में हो) उन्होंने संस्कृति को स्पष्टतः विकसित किया। जावा के ऐरालांगा को (एक राजा था) विष्णु का अवतार माना जाता है।

दक्षिण पूर्व एशिया तथा भारतीय सामाजिक–आर्थिक जीवन का समायोजित होना :–

दक्षिण–पूर्वी एशिया में बसने वाले भारतीय प्रवासी अपने साथ–साथ सामाजिक संस्था एवं मूल्यों को लेकर गए। सामाजिक क्षेत्र पर ब्राह्मणों का अधिकार था उन्होंने राजपरिवरों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया और ब्रह्म–क्षत्र कहलाए। एक चीनी अनुश्रुति के अनुसार ईस्वी सन् की आरंभिक शताब्दियों में फुनान (कम्बोडिया) के एक राज्य तुआन–तिवान में एक हजार से अधिक ब्राह्मण रहते थे। कम्बोज में सूर्यवर्मन (12वीं शताब्दी) के समय समाज में जातियों को 7 वर्गो में विभाजित किया गया था।

दक्षिण पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म, हिन्दु धर्म दोनों का व्यापक प्रसार हुआ था। बौद्ध धर्म की महायान शाखा के मंदिर तथा विहार का काफी संख्या में निर्माण करवाया गया। यहाँ की मूर्तियाँ तथा उत्कीर्ण लेखों से वेश–भूषा, उनके आभूषण तथा श्रृंगार उपकरण पर भारतीय शैली के बारे में जानकारी मिलती है। आभूषणों में मुकुट, कुंडलों, कंगन, (केयूर), कमरबंद (कटक) तुर्ये (मुकुट वेण) का चित्रण मिलता है।

दक्षिण पूर्व एशिया से प्राप्त अभिलेख शुद्ध संस्कृत में या स्थानीय भाषा में उपलब्ध है जिसमें कम्बुज (कम्बोज), (कम्बोडिया) में रूयेर भाषा में जावा में कवि भाषा का प्रयोग किया गया है ।

दक्षिण पूर्व एशिया तथा भारतीय धर्म का प्रभाव :–

दक्षिण पूर्व एशिया में वैष्णव मत शैव के साथ ब्राह्मणवाद और बौद्ध धर्म, विशेष रूप से महायान सम्प्रदाय यहाँ अधिक लोकप्रिय हुआ। बर्मा और थाइलैण्ड ने बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय को अपनाया, हीनयान वहाँ श्रीलंका से पहुँचा था। कम्बुज में लिंग का निर्माण ऊँचे स्तूपों (पिरामिडो) पर स्थापित किए जाते थे। एक उत्कीर्ण लेख में सुवर्ण लिंग ओर मणि अर्थात् रत्नजड़ित लिंग की स्थापना का उल्लेख है। इन अभिलेखों में शिव की शक्तियों, गौरी, भगवती, देवी, महादेवी ओर मातृलिंगेश्वरी आदि अनेक नामों का उल्लेख किया गया है। इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा ओर बोर्नियों में ब्राह्मण पंथी देवताओं की पूजा होती थी। विष्णु के अवतारों का चित्रण भी विभिन्न रूपों में यहाँ किया गया है।

भारतीय स्थापत्य की शैलियों का प्रभाव दक्षिण–पूर्वी एशिया के क्षेत्रों पर :–

इंडोचाइना, इंडोनेशिया, मलेशिया, में भारतीय संस्कषति के स्थापत्य कला एवं सांस्कृतिक जीवन के सभी पक्षों का व्यापक प्रभाव स्पष्ट होते है। इन देशों के एतिहासिक अवलोकन करने के उपरांत यहाँ ईसा की 5वीं शताब्दी से लेकर 15वीं शताब्दी तक के सांस्कृतिक लक्षण स्पष्ट रूप से उपस्थित है। एक लघु भारत का रूप स्पष्ट होता है। भारतीय प्रभाव का बहुत गहरा प्रभाव लोक जीवन पर भी पड़ा। कालांतर में भारत के साथ संपर्क टूट जाने के बाद भी इंडोचाइना क्षेत्र बौद्ध–धर्म प्रधान देश है। इन देशों में स्थापत्य कला एवं स्मारकों का भव्य रूप आज भी स्पष्ट रूप से संरक्षित है। यहाँ की नागर, द्रविड़ शैली के साथ–साथ वहाँ की स्थानीय शैली से निर्मित मंदिरों में भारतीय कलात्मकता का रूप स्पष्ट नजर आता है।

दक्षिण–पूर्व एशिया के प्रमुख भारतीय शैली पर आधारित मंदिर :–

दक्षिण–पूर्व एशिया के बैंकांक, इण्डोनेशिया, जावा, थाइलैण्ड आदि देशों में अनेक भारतीय शैली से निर्मित मिलती–जुलती हिन्दु तथा बौद्ध धर्म के मंदिर स्थापत्य विधमान है जिनमें सबसे प्राचीन सिंगापुर में स्थित मरीयाममन मंदिर (चाइना टाउन) में स्थित है । इसकी स्थापत्य शैली दक्षिण भारत के द्रविड शैली से काफी मिलती–जुलती है । इण्डोनेशिया में पराम्बनन मंदिर हिन्दु धर्म से सम्बन्धित है । यह त्रिमूर्ति मंदिर ब्रह्मा, विष्णु, शिव को समर्पित है । यह मंदिर भारतीय स्थापत्य शैली नागर शैली एवं द्रविड शैली से निर्मित है ।

दक्षिण पूर्व एशिया के स्थापत्य :–

म्यांनमार (वर्मा) थाइलैंड, लाओस, कम्बोडिया, वियतनाम, मलेशिया, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, फिलीपींस में प्रमुख मंदिरों का निर्माण काल 800 से 13वीं शताब्दी काल के हैं। ये सभी क्षेत्र हिन्द–चीन क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है। इन क्षेत्रों के स्थापत्य कला पर भारतीय तथा चीन, कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आता है। भारतीय भिक्षुओं को दक्षिण–पूर्व एशिया के कई भागों में धर्म–प्रचार के लिए भेजा गया। सोम लोगों ने मूर्ति के साथ वास्तुकला का व्यापाक रूप निर्माण करवाया जिनमें नाखोन पाथोम द चुला फाटोम चेदि यह ईट से निर्मित है, टेरा कोट्टा से सजावट किया गया था जो कि अब उपलब्ध नहीं है। इन्ही मोन साइटों के रूप में नाखोन पाथोम और कूबूआ की पहचान की गई।

खमेर कम्बोडिया में रहने वाले लोग थे। 12वीं शताब्दी तक यहाँ मुख्य रूप से हिन्दु तथा बौद्ध दोनों धर्मों का प्रभाव रहा। बौद्ध धर्म के मूर्तिकला का निर्माण 802 ई० पूर्व के अंगकोर राजवंश के राजाओं द्वारा किया था । बौद्ध चित्र में भगवान बुद्ध और दो बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर और मैत्रेय का चित्रण मिलता है।

अंगकोर के प्रत्येक राजा ने चरणबद्ध रूप से पिरामिड के रूप में मंदिर का निर्माण करवाया इस मंदिर में गर्भगृह के केन्द्र में रखे गए देवता न तो शिव का रूप है और न ही विष्णु का, लेकिन सात सिर वाले नाग (साँप के) के बीच बुद्ध की ध्यानमग्न मूर्ति स्थापित है। बेयोन का मंदिर 140 फुट टावर को घेरता हुआ एक घेरा है। इस मंदिर में 24 मीनारे हैं। इण्डोनेशिया की कला का सबसे सुन्दर रूप बोरोबदुर का स्मारक है, जो वास्तुकला का सुन्दर नमूना प्रस्तुत करता है। इसका निर्माण काल 8वीं शताब्दी माना जाता है।

दक्षिण पूर्व एशिया बौद्ध कला के प्रमुख केन्द्र :–

दक्षिण–पूर्व एशिया के प्राचीन बौद्ध कला लगभग 6ठी शताब्दी ई० पूर्व की मानी जाती है। भगवान बुद्ध की मूर्तियाँ भारतीय मूर्तियों के साथ शैलीगत रूप से सम्बन्ध रखती है। भारत में मूर्तिकला का मुख्य रूप से गुप्तकाल में विकास माना जाता है। गंधार शैली तथा मथुरा शैली दोनों रूपों में मूर्तिकला का विकास हुआ। दक्षिण–पूर्व एशिया को भारतीय धर्मो बौद्ध धर्म और हिन्दु (सनातन) दोनों धर्मों से पहचान करवाया गया। बौद्ध कला से सबसे पहले परिचित होने वाले लोगों में पीयु, सोम, खमेर और चाम थे। इनका विभाजन भाषा के आधार पर किया गया था।

पीयू बर्मा के मध्य ओर उतरी भागों में रहते थे, इनलोगों ने सबसे अधिक बौद्ध कलाकृतियों को उजागर किया। सोम दक्षिणी बर्मा और थाइलैण्ड में रहने वाले लोग थे और ये बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित थे और इन्होनें पत्थरों पर पाली भाषा में छंदो को लिखा था। इनलोगों ने पत्थर, कांस्य और मिट्टी से बौद्ध मूर्तियों का काफी संख्या में निर्माण करवाया। भारतवर्ष के हिन्दु (सनातन) धर्म और बौद्ध धर्म का दक्षिण पूर्व एशिया में व्यापक रूप से प्रचार–प्रसार हुआ था। दक्षिण पूर्व एशिया के लोगों ने धर्म को अपनी स्वदेशी परम्पराओं के अनुसार के उसमें बदलाव किया और उसे अपनाया।

दक्षिण पूर्व एशिया के वियतनाम में डोंगसन (या डोंग सोन) संस्कृति टोनकिन खाड़ी के आस–पास केन्द्रित थी, उसकी सर्पिली जो विशिष्ट शैली है इसका प्रभाव चीन में विशेष रूप से प्रभावित है।

आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों के कारण भारत और चीन का सम्बन्ध गहरा होता गया और धार्मिक प्रभाव (बौद्ध धर्म का विकास) का असर स्थापत्य पर भी पड़ा। भारतीय पत्थरों से (लगभग 6%) निर्मित होने लगे। फूनान राज्य चीन का महत्वपूर्ण नगर राज्य था जिसे मेकांग में स्थानांतरित कर (चेन ला चेनला) राज्य में जोड़ा गया वहाँ खमेर कला का काफी विकास हुआ खमेर कला विशेषतः मूर्तिकला के निर्माण से सम्बन्धित है। खमेर स्मारकों में सबसे प्रसिद्ध अंगकोरवाट (या वात) जो 12वीं शताब्दी की शुरूआत में निर्मित एक विशाल मंदिर परिसर है। सूर्यवर्मन II द्वारा यह मंदिर निर्मित करवाया गया ।

कम्बोडिया में मूर्तियों का निर्माण लकड़ी से किया जाता था, जलवायु के विभिन्न परिस्थितियों को झेलने के कारण वर्तमान समय में उसके अवशेष नहीं बचे हैं ।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार भारतीय एवं दक्षिण पूर्व एशिया के स्थापत्य कला, संस्कृति – धार्मिक मान्यताएँ इन सभी का ऐतिहासिक अध्ययन करने पर उनमें काफी हद तक समानताएँ दिखती हैं। हालांकि धर्म एवं स्थापत्य शैली पर स्थानीयता का प्रभाव अधिक है। धर्म एवं कला को भारतीय संस्कृति का दर्पण कहा गया है। इस संदर्भ में पितरिम ए० सोरोकिन के अनुसार –

''Art is the barometer of a nation's culture.''

अर्थात् कला ही किसी राष्ट्र की संस्कृति का पैमाना है। भारतीय कला की मुख्य विशिष्टता 'धर्म' से प्रभावित होना है। यहाँ की कला राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाने के साथ–साथ 'सत्यता' को जागृत करने का मुख्य स्त्रोत है। वास्तव में भारतीय कला हमारी संस्कृति के सभी पक्षों को उजागर करने का सशक्त माध्यम है और अपनी विशेषताओं के कारण ही एशिया के अधिकांश भागों में कला की परम्पराओं को नवीन रूप प्रदान कर सकी है। भारत की स्थापत्य शैली नागर एवं बेसर तथा मूर्तिकला की गांधार एवं मथुरा शैली का व्यापक प्रभाव यहाँ के मंदिर एवं मूर्तियों पर पड़ा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. *चोपड़ा, (2016) भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास, प्राचीन भारत, Trinity Press New Delhi.*
2. *Majumdar R.C., (1979) India and South-East Asia, I.S.P.Q.S History and Archaealogy Series Vol- 6.*
3. *Rao, K.P. (December 2001) Early Trade and Contacts between South India and Southeast Asia (300- BC – A.D 200) East and West, Page No. – 385-394.*
4. *Majumdar R.C Study of Sanskrit in South – East Asia*
5. *Chihara Daigaro, (1996), Hindu- Buddhist architecture in South East Asia.*
6. *www. esamskriti com/easy – chapter/ Historical – Ties – India – and - Thailand.*

****